



CHETANA
International Journal of Education (CIJE)

Peer Reviewed/Refereed Journal
ISSN : 2455-8279 (E)/2231-3613 (P)

Impact Factor
SJIF 2026-8.584



Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

कौटिल्य के अर्थशास्त्र और महाभारत में इन्फॉर्मेशन वारफेयर के सूत्र

डॉ. सूर्यप्रकाश

डिप्टी एडिटर, एनडीटीवी डिजिटल

Email- suryaprakash013@gmail.com, Mobile-9871556013

First draft received: 18.08.2026, Reviewed: 22.08.2026

Final proof received: 25.08.2026, Accepted: 21.09.2026

सारांश

भारतीय ज्ञान परंपरा में किसी भी विषय के सूत्र पाए जाते हैं। वर्तमान दौर में युद्ध क्षेत्र और उसकी रणनीति एवं साधनों में भी तेजी से बदलाव आ रहे हैं। इन सभी को एक नई शब्दावली हाइब्रिड वारफेयर में समाहित किया जाता है, जिसका केंद्रीय तत्व इन्फॉर्मेशन वारफेयर रहा है। हमें यह शब्दावली नई मालूम पड़ती है, किंतु इसके संदर्भ में अध्ययन करने पर पता चलता है कि भारतीय महाग्रंथों महाभारत और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इसके सूत्र पूरी गहराई से पाए जाते हैं। कौटिल्य ने तो सूचना को इतना अहम माना है कि वे इसे युद्ध क्षेत्र में चलाए गए हथियारों से भी ज्यादा मारक मानते हैं। इसी प्रकार महाभारत के भी दो ऐसे प्रसंग हैं, जहां दो सूचनाएं पूरे युद्ध क्षेत्र का माहौल बदल देती हैं और इसका सीधा असर परिणाम पर भी पड़ता है। प्रस्तुत शोध पत्र में इन दो ग्रंथों का संदर्भ लेते हुए इन्फॉर्मेशन वारफेयर का अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द - भारतीय ज्ञान परंपरा, हाइब्रिड वारफेयर, युद्ध क्षेत्र, इन्फॉर्मेशन वारफेयर.

प्रस्तावना

बीते करीब दो दशकों में परंपरागत युद्ध के अतिरिक्त अन्य साधनों के भी इस्तेमाल को लेकर हाइब्रिड वारफेयर शब्द का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। हथियारों की तकनीक और उनके प्रयोग में परिवर्तन, युद्ध में सीधी जंग के अतिरिक्त भी अन्य उपायों के शामिल होने के अलावा भी कई ऐसे माध्यम हैं, जो अब युद्ध का हिस्सा हैं। इन सभी को मिलाकर एक टर्म हाइब्रिड वारफेयर उभरती है। इसमें किसी देश में राजनीति अस्थिरता पैदा करना, नागरिकों में असंतोष पैदा करना, खुफिया जानकारी हासिल करना और आर्थिक पाबंदियां अथवा नाकेबंदी जैसी स्थिति बनाना शामिल हैं। किंतु इसमें एक केंद्रीय तत्व है- सूचना। हाइब्रिड वारफेयर में सूचना का इस्तेमाल युद्ध के एक तरीके के तौर पर किया जाता है। नेपोलियन बोनापार्ट का तो इस संबंध में मशहूर कथन है- युद्ध 90 फीसदी सूचना है। युद्ध अथवा सामान्य स्थितियों में प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ सूचना का इस्तेमाल उसे कमजोर करने के लिए करना इन्फॉर्मेशन वारफेयर कहलाता है। इन्फॉर्मेशन वारफेयर की विशेषता यह है कि इसमें स्टेट ऐक्टर्स यानी आधिकारिक तौर पर कोई सरकारी एजेंसी शामिल हो सकती है और नॉन-स्टेट ऐक्टर्स भी इसमें लगाए जा सकते हैं। अमेरिका ने तो इस सिद्धांत पर 1995 में ही काम करना शुरू किया था। इन्फॉर्मेशन वारफेयर की महत्ता को समझते हुए अमेरिका ने इन्फॉर्मेशन वारफेयर एग्जीक्यूटिव बोर्ड का गठन किया था।¹ इन्फॉर्मेशन वारफेयर की मुख्य विशेषता यह है कि इसकी लागत बेहद कम है। एक सटीक रणनीति बनाकर इसके तहत व्यापक असर पैदा किया जा सकता है। इसके अलावा कम अवधि में दीर्घकालिक प्रभाव छोड़ने में भी इससे सफलता मिलती है। इस वारफेयर में सीमाओं का अंत हो जाता है, इसके अलावा एक बड़ा ग्रे जोन भी तैयार होता है, जिसमें प्रतिद्वंद्वी को मात दी जा सकती है। यह ऐसा वारफेयर है, जिसमें सैन्य क्षमता की संपन्नता में कमजोर देश भी एक मजबूत प्रतिद्वंद्वी को चुनौती दे सकता

है।² हाइब्रिड वारफेयर का यह सबसे अहम अंग है और एक प्रकार से केंद्रीय तत्व ही इसे कहा जा सकता है।

आधुनिक समय में बेंजामिन फ्रैंकलिन को हाइब्रिड वारफेयर शब्दावली का जनक माना जाता है। बदलते दौर में भले ही हाइब्रिड वारफेयर जैसा शब्द हमें गैर-परंपरागत युद्धों के लिए मिला है, किंतु यह भी सत्य है कि भारत में इसके सूत्र काफी पुराने हैं। विशेष तौर पर सूचना वारफेयर के प्रयोग के तो कई प्रसंग मिलते हैं। इसके एक सशक्त उदाहरण के रूप में महाभारत के युद्ध के उस प्रसंग का भी वर्णन होता है, जिसमें अश्वत्थामा के मारे जाने की सूचना जब द्रोणाचार्य को मिलती है तो जंग के बीच उनका हौसला कमजोर हो जाता है। गुरु द्रोण पूरी सूचना नहीं सुन पाते हैं, जबकि युधिष्ठिर यह बता रहे होते हैं कि अश्वत्थामा मारा गया, नर नहीं कुंजर यानी हाथी। किंतु जब वह इतना भर कह पाते हैं कि अश्वत्थामा मारा गया, तभी भगवान कृष्ण शंख बजा देते हैं और द्रोणाचार्य पूरी बात नहीं सुन पाते हैं। अर्धसत्य को ही सत्य मान लेने से गुरु द्रोणाचार्य का हौसला कमजोर हो जाता है और पुत्र वियोग में वह पहले जैसे सामर्थ्य के साथ युद्धरत नहीं रह पाते। अंत में वह कुरुक्षेत्र की समरभूमि में परमगति को प्राप्त होते हैं।³ यह प्रसंग महाभारत के युद्ध के परिणाम बदलने वाले महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। महाभारत का ही एक और प्रसंग है, जो इन्फॉर्मेशन वारफेयर का रोचक उदाहरण है। पांडवों की ओर से संधि प्रस्ताव लेकर गए भगवान कृष्ण ने कर्ण को कौन्तेय कहकर पुकारा। इस पर कर्ण पूछते हैं कि आखिर आप मुझे कौन्तेय क्यों कह रहे हैं। अंत में कर्ण को जब सत्य मालूम चलता है तो वह माता कुंती को यह वचन देने पर बाध्य हो जाते हैं कि उनकी ओर से सिर्फ अर्जुन का ही वध किया जाएगा और शेष 4 भ्राता दुर्योधन, भीम, नकुल और सहदेव के लिए वह खतरा उत्पन्न नहीं करेंगे। इस प्रकार एक जानकारी का युद्ध के बीच खुल जाना पूरा परिदृश्य ही बदल देता है। किसी सेना का सेनापति यदि प्रतिद्वंद्वी पक्ष के 4 बड़े योद्धाओं को किसी भी हाल में ना मारने का ही संकल्प कर ले तो समझा जा सकता है कि

¹ Molander, Andrew S. Riddile, Peter A. Wilson, 1996, Strategic Information Warfare: A news face of war, p.2

² Ibid, p.17

³ चतुरसेन, आचार्य, (2023) धर्मोत्थिति, प्रभात प्रकाशन, पृ. 423

युद्ध का परिणाम क्या हो सकता है।⁴ कर्ण जब सच्चाई पता लगने के बाद भी पांडव पक्ष के प्रति उदारता नहीं बरतते हैं और माता कुंती के प्रति अपनी शिकायत प्रकट करते हैं तो भगवान कृष्ण ने भी अपनी कई बातों से उनके रुख को नरम करने का प्रयास किया। भगवान कृष्ण कहते हैं कि यदि तुम कहते हैं कि मेरे साथ अन्याय हुआ और मुझे संसार में उपेक्षा एवं दुख का सामना करना पड़ा तो ऐसी ही स्थिति मेरी भी थी। मेरे तो जन्म से पहले ही मुझे मारने की तैयारी थी। जेल में जन्म हुआ और औपचारिक शिक्षा भी काफी देरी से प्राप्त हुई। हर कोई यही कहता रहा है कि मैं उनके दुखों का कारण हूँ। मेरी शिक्षा महर्षि संदीपनी के आश्रम में तब शुरू हुई, जब मैं 16 वर्ष का हो चुका था। किंतु तुम अल्पायु से ही शत्रु और शास्त्र की शिक्षा पा चुके थे। इस प्रकार कर्ण के रुख को भगवान कृष्ण ने नरम किया और अंततः उसने माता कुंती को अर्जुन को छोड़कर 4 अन्य भाइयों के प्रति वैर त्यागने का वचन ही दे दिया।⁵ महाभारत के ये दोनों प्रसंग प्राचीन दौर में इन्फॉर्मेशन वारफेयर के रोचक और बेहद प्रभावी उदाहरण हैं।

आधुनिक दौर की बात की जाए तो भारत स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ऐसे कई संघर्षों का सामना कर चुका है, जो एक प्रकार से हाइब्रिड वारफेयर ही थे और उनमें प्रधान तत्व इन्फॉर्मेशन वारफेयर था। जम्मू-कश्मीर में जिस तरह से 1947-48 में कबायली हमला हुआ और गिलगित-बाल्टिस्तान के संदर्भ में दो दिन बाद जानकारी मिल सकी, वह भी एक प्रकार से इन्फॉर्मेशन वारफेयर ही था। श्रीनगर, जम्मू और दिल्ली तक गिलगित-बाल्टिस्तान के वास्तविक हालात की जानकारी ही नहीं पहुंच रही थी और ये दो दिन निष्पत्ति साबित हुए। इस प्रकार इन्फॉर्मेशन वारफेयर इस युद्ध में प्रमुख तत्व साबित हुआ। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान की छद्म युद्ध की नीति का भी प्रधान तत्व इन्फॉर्मेशन वारफेयर ही रहा है। 1971 के संघर्ष और कारगिल युद्ध तक में इसका प्रयोग प्रतिद्वंद्वी की ओर से किया गया था। इसीलिए यह कहना उचित होगा कि इन्फॉर्मेशन वारफेयर जैसी शब्दावली भले ही नवीन लगती है, किंतु इसे सूत्र भारत में काफी पुराने हैं। यहां तक कि कौटिल्य ने भी अपने अर्थशास्त्र में इसका वर्णन किया है। उन्होंने अपने प्रसिद्ध ग्रंथ में तीन युद्धों की बात कही है, प्रकाश युद्ध, कूट युद्ध और मंत्र युद्ध। इनमें से पहला यानी प्रकाश युद्ध तो सीधी जंग की बात करता है, लेकिन कूट युद्ध और मंत्र युद्ध एक प्रकार से हाइब्रिड वारफेयर की ही बात करते हैं और उनमें इन्फॉर्मेशन वारफेयर केंद्रीय भूमिका में दिखता है। यही कारण है कि यदि चीन के शुन जू (544 ईसा पूर्व) हाइब्रिड वारफेयर के बारे में बात करने वाले प्राचीन विद्वानों में से एक हैं तो लगभग उसी कालखंड में आचार्य चाणक्य अर्थात् कौटिल्य (375 ईसा पूर्व) ने भी अर्थशास्त्र लिखकर इसके सूत्रों से हमें अगवत कराया था। महाभारत में हम इन्फॉर्मेशन वारफेयर का एक प्रसंग ही देखते हैं, किंतु अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने तो इसके संदर्भ में पूरी एक व्यवस्था ही दी है।

अर्थशास्त्र के एक अध्याय ब्यूह-प्रतिब्यूह स्थापना में कौटिल्य लिखते हैं-

‘एकं हन्यान्न वा हन्यादिषुः क्षितौ धनुष्मता।

प्राज्ञेन तु मतिः क्षिता हन्याद् गर्भगतानपि।’

इसका अर्थ हुआ- धनुर्धारी के धनुष से छोड़ा गया बाण, संभव है कि किसी एक व्यक्ति को ही मार डाले या न भी मारे। किंतु बुद्धिमान व्यक्ति के द्वारा किया गया बुद्धि का प्रयोग गर्भस्थ प्राणियों को भी नष्ट कर देता है। इसलिए युद्ध की अपेक्षा बुद्धि को ही अधिक शक्ति संपन्न समझना चाहिए।⁶ प्रतिद्वंद्वी के दल को किस प्रकार भ्रामक सूचना एवं इन्फॉर्मेशन वारफेयर के माध्यम से भ्रमित किया जा सकता है। इस संबंध में भी कौटिल्य ने विस्तार से लिखा है। वह लिखते हैं, ‘शत्रु के दूष्यों अर्थात् नाराज तत्वों में कोप पैदा करके, आगे गायों का झुंड खड़ा करके, छावनी में आग लगाकर सेना के आगे-पीछे छापा मारकर, गुप्तचरों को शत्रु सेना में घुसाकर शत्रु सेना को बेचैन करना चाहिए।’ इसके आगे वह लिखते हैं, ‘तेरे दुर्ग को आग लगा दी गई है। तेरे दुर्ग को जीत लिया

गया है। तेरे कुल का ही कोई व्यक्ति तेरे विरुद्ध उठ खड़ा हुआ है। तेरा सामंत युद्ध के लिए तैयार हो गया है। तेरा आवंटित तेरे विरुद्ध उठ आया है आदि अफवाहों को उड़ाकर भी शत्रु सेना को उद्भिष्ट किया जा सकता है।’⁷ कौटिल्य ने शासन और कर व्यवस्था के बारे में विस्तृत जानकारी दी थी तो वहीं उन्होंने युद्ध कला के बारे में भी प्राचीन काल में ही लिखा था। कूट युद्ध और मंत्र युद्ध जैसे अर्थशास्त्र में वर्णित अध्याय आज भी प्रासंगिक हैं और एक प्रकार से हाइब्रिड वारफेयर अथवा इन्फॉर्मेशन वारफेयर के सूत्र उनमें पाए जाते हैं। कूटयुद्ध और सेना प्रयोग नामक अध्याय में वह लिखते हैं, ‘व्यसनापन्न सेना पर या लंबे सफर, जंगल के सफर अथवा जलाभाव की अवस्था में शत्रु के ऊपर आक्रमण किया जाए। अथवा शत्रु की विरुद्ध स्थिति और अपनी अनुकूल स्थिति होने पर आक्रमण करे। शत्रु के अमात्य आदि को वश में करके तब आक्रमण किया जाए अथवा राजद्रोहियों, शत्रुओं और जांगलियों को अपनी पराजय का विश्वास दिलाकर जब वे अपना स्थान छोड़ दें, तब उन पर आक्रमण किया जाए। अनुकूल भूमि में एक स्थान पर ठहरी हुई शत्रु सेना को हाथियों द्वारा छिन्न-भिन्न किया जाए।’⁸ आचार्य कौटिल्य कूट युद्ध को लेकर अपनी परिभाषा में प्रतिद्वंद्वी के मुकाबले हरसंभव सख्त नीति अपनाने की बात करते हैं। वह प्रतिद्वंद्वी के समूल नाश की बात करते हुए लिखते हैं, ‘पूर्व पराजय के कारण तितर-बितर हुई शत्रु की सेना को विजिगीषु की एकत्र सेना लौटकर फिर मारे। सामने की ओर से आक्रमण करने के कारण तितर-बितर अथवा भागी हुई शत्रु की सेना को पीछे की ओर से घुड़सवारों और हाथियों के द्वारा नष्ट करा दिया जाए। पीछे की ओर से आक्रमण करने के कारण छिन्न-भिन्न या उलटी भागी हुई शत्रु सेना को सामने की ओर से बहादुर सैनिकों के द्वारा नष्ट-भ्रष्ट करा दिया जाए।’⁹

कौटिल्य ने युद्ध में विजय को सर्वाधिक प्राथमिकता दी है और उसके लिए हरसंभव उपाय करने के लिए वह प्रेरित करते हैं। कौटिल्य लिखते हैं कि जंगल के दुर्ग, मरुस्थल, दलदल भूमि, पहाड़ी इलाके, तराई क्षेत्र, ऊबड़-खाबड़ भूमि, नौकाएं, गायों के झुंड, कोहरा और रात्रि में छिप कर युद्ध करना चाहिए। उन्होंने युद्ध में संचार कौशल को भी अहम माना है। वह कहते हैं कि एक शासक अथवा सेनापति के द्वारा अपने सैनिकों से कहे गए शब्द महत्वपूर्ण होते हैं। वह कहते हैं कि विजय की चाह रखने वाले शासक को अपनी संगठित सेना को यह आभास दिलाना चाहिए कि वह उनमें से ही एक है और उनकी तरह ही युद्धभूमि में उतरने के लिए तत्पर है। भारतीय सेना का मंत्र ‘अग्रिम पंक्ति में रहकर नेतृत्व’ भी इसी विचार से निकला प्रतीत होता है। वह कहते हैं, ‘विजिगीषु को चाहिए कि वह अपनी संगठित सेना से कहे कि मैं भी आपके ही समान वेतनभोगी नौकर हूँ। आप लोगों के साथ ही मैं इस राज्य का उपयोग कर सकता हूँ। इसलिए जिसको मैं शत्रु बताऊँ, वह आप लोगों के हाथों अवश्य मारा जाना चाहिए।’¹⁰ इंजीनियर कॉर्प्स में रहे कर्नल दीपक पालांडे ऑपरेशन पराक्रम के दौरान लाइन ऑफ कंट्रोल के पास तैनात रहे थे। वह ‘Kautilya's Arthashastra and its Relevance in 21st Century’ शीर्षक के अपने एक शोध पत्र में लिखते हैं कि यह आज भी समान रूप से प्रासंगिक है, जैसा कि सदियों पहले अपने लिखे जाने के दौरान था। कौटिल्य का अर्थशास्त्र चौथी शताब्दी ईसा पूर्व से ही अखंड भारत की बात करने वाला ग्रंथ रहा है। यही वह दौर था, जब मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई थी। आज के जटिल दौर में भी यह ग्रंथ प्रासंगिक है और राज्य की नीति के बारे में विस्तार से बात करता है और शासन के सूत्र भी प्रदान करता है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में बहुत गहराई से बताया गया है कि शासक का वहां की जनता के प्रति कैसे व्यवहार होना चाहिए। इसके अतिरिक्त अर्थशास्त्र में विदेश नीति, अर्थशास्त्र, कॉन्फ्लिक्ट मैनेजमेंट, आंतरिक और बाह्य सैन्य व्यवस्था समेत सामाजिक कल्याण की योजनाओं के बारे में भी विस्तार से कहा गया है।¹¹ कौटिल्य ने अर्थशास्त्र में युद्ध नीति के संबंध में विस्तार से लिखा है। ‘उन्होंने 4 प्रकार के युद्धों की बात कही है। सबसे पहले वह मंत्रयुद्ध की बात करते हैं, जिसमें कूटनीतिक तरीकों से विवाद के निस्तारण की बात कही गई है। इसके अलावा वह प्रकाश युद्ध की बात वह कहते हैं, जिसका अर्थ खुले में युद्ध करने की है। वहीं उन्होंने कूट युद्ध की बात भी कही है, जिसके तहत वह मनोवैज्ञानिक युद्ध और हाइब्रिड

⁴ Joshi, Aniruddha, Web Dunia. Accessed at https://hindi.webdunia.com/mahabharat/karna-in-mahabharata-120121900064_1.html on 5/1/2025.

⁵ Drops of Time, 2018. Life is Not Fair on Anybody — Sri Krishna conversation with Karna, Accessed at <https://dropsofetime.medium.com/life-is-not-fair-on-anybody-sri-krishna-conversation-with-karna-73a9bf53e293> on 5/1/2026.

⁶ नैरोला, वाचस्पति, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, संस्करण 2022, पृ. 666

⁷ Ibid, पृ. 665

⁸ Ibid, पृ. 644

⁹ Ibid

¹⁰ Ibid पृ. 646

¹¹ Palande, Deepak (2019). Kautilya's Arthashastra and its Relevance in 21st Century, no. 169

तरीकों के इस्तेमाल करने की बात कही है। इसके अलावा गुप्त युद्ध के तहत जासूसी के तरीकों के इस्तेमाल, विरोधियों का कत्ल कराना आदि शामिल है।¹²

हम पाते हैं कि पाकिस्तान पर सर्जिकल, एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर जैसी कार्रवाई अचानक की जाती है। इसके अतिरिक्त भारत में काले धन की समाप्ति के उद्देश्य से 500 और 1000 रुपये के नोटों को प्रचलन से बाहर करने का फैसला देश के प्रधानमंत्री अचानक ही अपने एक संबोधन करते हैं। उससे ठीक पहले तक किसी को यह आभास तक नहीं होता है कि सरकार ऐसा कुछ विचार बना रही है। प्रतिद्वंद्वी के बारे में खुफिया जानकारी हासिल करना यदि युद्ध में सफलता की संभावना बढ़ा देता तो वहीं अपने खेमे की संवेदनशील जानकारी दूसरे पक्ष तक पहुंचना भी समान रूप से हानिकारक है। इसलिए इस बात का ध्यान रखना अनिवार्य है कि कोई संवेदनशील जानकारी, तय रणनीति के बारे में दूसरे पक्ष को कोई खबर न मिल सके। सच यह है कि इन्फॉर्मेशन वारफेयर में प्रतिद्वंद्वी के बारे में यदि संवेदनशील जानकारी हासिल करके उसका लाभ उठाना शामिल है तो वहीं अपने बारे में ऐसी ही जानकारी का प्रसार होने से रोकना भी इसी के तहत आता है। आचार्य चाणक्य ने संवेदनशील सूचनाओं को गोपनीय रखने पर भी बेहद स्पष्टता से लिखा है। वह अर्थशास्त्र के मंत्राधिकार नामक अध्याय में लिखते हैं, 'जिस स्थान पर मंत्रणा की जाए, वह चारों ओर से इस प्रकार बंद होना चाहिए, जिससे वहां पक्षी तक न झांक सके। कोई शब्द बाहर न सुनाई दे क्योंकि अनुश्रुति है कि पुराकाल में किसी राजा की गुप्त मंत्रणा को तोता और मैना ने सुनकर बाहर प्रकट कर दिया था। इसी प्रकार कुत्ते तथा अन्य पशु-पक्षियों के संबंध में भी सुना जाता है। इसलिए राजा की आज्ञा के बिना कोई भी व्यक्ति किसी भी स्थिति में मंत्रणास्थल पर न जावे। यदि गुप्त मंत्रणा का भेद कोई फोड़ दे तो तत्काल ही उसे मरवा देना चाहिए।'¹³

इसके आगे वह लिखते हैं, 'कभी-कभी बिना कहे ही दूत, अमात्य तथा राजा के हाव-भाव एवं मुद्रा द्वारा भी गुप्त भेद प्रकट हो जाते हैं। स्वाभाविक क्रियाओं के विपरीत भिन्न चेष्टाएं इंगित कहलाती हैं। चेष्टाओं को प्रकट करने वाले अंग आकार या आकृति कहलाते हैं। इसलिए विजिगीषु राजा को चाहिए कि जब तक विचारित कार्यों के आरंभ का समय नहीं आ जाता, तब तक अपने गुप्त भावों को दबाकर रखे। मंत्रियों की असावधानी के कारण या मद्यपान की वेदोशी में अथवा सोते समय आकस्मिक प्रलाप द्वारा या विषय भोग की लालसा से अथवा अभिमान के भाव से गुप्त मंत्रणाएं समय से पहले ही प्रकट हो जाती हैं। आड़ में छिपकर सुनने वाले अथवा मंत्रणाकाल में मूर्ख कहकर अपमानित हुआ व्यक्ति भी भेद को फोड़ देता है। इसलिए राजा को चाहिए कि वह अपने गुप्त रहस्यों की सावधानी से रक्षा करे।'¹⁴

इस प्रकार भारत के दो प्रमुख ग्रंथों महाभारत और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में इन्फॉर्मेशन वारफेयर के सूत्र मिलते हैं। वर्तमान दौर में साइबर तकनीक के विकास और संचार के माध्यमों की व्यापकता ने चीजों को तेजी से बदला है। ऐसी स्थिति में अब ये माध्यम युद्ध क्षेत्र का भी अनिवार्य अंग हो चुके हैं, किंतु संचार माध्यम या फिर सूचनाएं हमेशा से युद्ध क्षेत्र अथवा रणनीतिक तैयारियों का हिस्सा रही हैं। हाइब्रिड वारफेयर और उसके मुख्य तत्व इन्फॉर्मेशन वारफेयर के संदर्भ में जब हम अध्ययन करते हैं तो नवीनतम अवधारणाओं के साथ भारतीय शास्त्रों में वर्णित प्रकरणों का भी अध्ययन हमें नई दृष्टि प्रदान करता है। ऐसे समय में जब हम स्व के बोध को तलाश रहे हैं, तब हाइब्रिड वारफेयर जैसी महत्वपूर्ण नवीन अवधारणाओं के संदर्भ में भारत के मौलिक चिंतन का अध्ययन भी प्रासंगिक है।

संदर्भ:

1. Menon 2024, 'Thinking About India's Future', flagship paper by the Centre for Social and Economic Progress (CSEP)
2. Tom Madsen 2019, Title: The Art of War for Computer Security, p.5
3. Peter, Kestner (2024). The Art of Cyber Warfare: Strategic and Tactical Approaches for Attack and Defense in the Digital Age.

¹² ibid

¹³ गैरोला, वाचस्पति, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, संस्करण 2022, पृ. 43

¹⁴ Ibid p.44

4. Gautam, P. K. (2021). "Kautilya's Arthashastra and Chanakya Niti." *Journal of Defence Studies*, p. 23-45.

5. Panday, S. R. (2018). *Exploring Chanakya's Relevance in Modern Economic Spheres*, p. 391-400.

6. Tripathi, S., & Pillai, R. (2023). Dr. Radhakrishnan Pillai on Kautilya's Arthashastra, Saptang Model, Rajdharma & Chanakya Neeti, *Forum for Global Studies*.

7. Menon, S. (2023). *The Arthashastra of Chanakya and Its Implications for National Security*, University of Kerala.

8. Saran, S. (2023). *From Kautilya to Modi: Evolution of India's National Security Doctrine*, Indian Defence Review.

9. Kanwal, G. (2016). *The New Arthashastra: A Security Strategy for India*. *Journal of Defence Studies*.

10. Gautam, P. K. (2018). *Kautilya's Arthashastra and its Relevance to Contemporary Strategic Studies*, *Journal of Defence Studies*, p. 23-45

11. Gairola, Vachaspati, (2022) *Kautilya Ka Arthshastra*, Chaukhamba Prakashan.

12. Mahabharatha, Gita Press.